International Journal of Research in Social Sciences And Humanities http://www.ijrssh.com/

(IJRSSH) 2012, Vol. No. 2, Issue No. I , Jan-Mar **ISSN: 2249-4642**

संस्मरण विधा और तपती पगडंडियों पर पद यात्रा

***Poonam Beniwal, #Dr. Shayma Purohit**
**Research Scholar*
#Associate Prof, N.S.P. College, Bikaner

हिन्दी संस्मरण बीसवीं शताब्दी की देन है परन्तु आज संस्मरण विधा विशाल परंपरा के रूप में सामने आई है। इस युग में संस्मरण लेखन की ओर लेखकों का ध्यान तेजी से आकर्षित हुआ है और काफी मात्रा में संस्मरण प्रकाश में आये हैं। समग्रतः हिन्दी संस्मरण साहित्य ने अपनी छोटी–सी विकास–यात्रा में जिस बहुरंगी एवं विविध आयामी समृद्ध परंपरा का निर्माण किया है, वह स्पृहणीय है। संस्मरण विधा एक स्वतंत्र साहित्यिक विधा के रूप में सामने आई है। स्वतंत्र साहित्यिक विधा के अतिरिक्त शैली के विशिष्ट रूप की दृष्टि से संस्मरण शैली का विकास हुआ है और संस्मरण एक शैली बन गई है। इस प्रकार शैली की दृष्टि से और स्वतंत्र साहित्यिक विधा की दृष्टि से इस विधा के विकास की संभावनाएँ उज्ज्वल हैं।

संस्मरण साहित्य और उसका विकास

सर्वविदित है कि परिवर्तन संसार का नियम है परिवर्तन ही सारी सृष्टि का आधार है। समाज में समय के अनुसार परिवर्तन होता रहता है। सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों के अनुसार ही साहित्यिक विधाओं का उद्भव और विकास होता है। बीसवीं सदी में साहित्यिक जगत में साहित्य की अनेक विधाएँ प्रकाश में आईं। पद्य की अपेक्षा गद्य साहित्य का विकास अधिक हुआ है। आज के युग में गद्य की विविध विधाओं का पूर्ण विकास, प्रचार एवं प्रसार हुआ है। प्रगतिशील गद्य के क्षेत्र में अनेक नयी एवं कलात्मकता से पूर्ण गद्य विधाओं (नाटक, निबंध, उपन्यास, कहानी, रेखाचित्र, जीवनी, आत्मकथा, यात्रा वृत्तांत) का आगमन हुआ है। इनमें से ही एक विधा है––संस्मरण विधा। संस्मरण को मनोरंजक विधा माना जाता है। अन्य साहित्यिक विधाओं के समान ही संस्मरण विधा का उद्देश्य भी रागात्मक ध्वनि चित्रों द्वारा पाठक को रसमग्न करना है। अपने निजी अनुभव को लेखक विशिष्ट व्यक्तियों, वस्तुओं अथवा क्रिया–कलापों के चित्रण के माध्यम से ही व्यक्त करता है। संस्मरण में यथार्थ का चित्रण भावना की गहनता लिये होता है। इसलिए व्यक्ति से अधिक वर्णित घटना अथवा व्यवहार को आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करना ही संस्मरण का ध्येय होता है। किसी भी विधा को पूर्ण रूपेण स्पष्ट करने के लिए उसके अर्थ, परिभाषा आदि को स्पष्ट करना भी आवश्यक है क्योंकि इन्हीं में प्रत्येक विधा का स्वरूप निहित रहता है।

अतएव संस्मरण विधा के अर्थ, परिभाषा, अन्य विधाओं के साथ संबंध और संस्मरण विधा के विकास को स्पष्ट करना समीचीन रहेगा ।

संस्मरणः अर्थ एवं परिभाषा

'संस्मरण' शब्द की व्युत्पत्ति सम् (उपसर्ग) + स्मृ (धातु) + ल्युट् (अण) से हुई है। जिसका अर्थ है––सम्यक् स्मरण। 'सम्यक्' शब्द का अर्थ है––'पूर्णरूपेण' जिसका आशय है––सहज आत्मीयता तथा गंभीरता से किसी व्यक्ति, घटना, दृश्य, वस्तु आदि का स्मरण करना। पाश्चात्य साहित्य में संस्मरण के लिए 'रैमिनीसेसिज्' और 'मेमायर्स' शब्द का प्रयोग हुआ है, जिसका संबंध आत्मवृत्त निरूपण और दूसरे का संबंध किसी अन्य व्यक्ति के स्मृति संदर्भ का अंकन करने से है। हिन्दी साहित्य में 'संस्मरण' शब्द का प्रयोग का स्वतंत्र विधा के रूप में हुआ है। व्यक्तिगत अनुभव तथा स्मृति से रचा गया इतिवृत्त अथवा वर्णन ही संस्मरण है। इसमें लेखक प्रायः अपने जीवन का वृतान्त अथवा अपने जीवन में घटित घटनाओं का वर्णन करता है। विभिन्न विद्वानों ने संस्मरण की परिभाषा इस प्रकार दी है–

डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा संस्मरण की परिभाषा देते हुए कहते हैं––''स्मृति के आधार पर किसी विशेष या व्यक्ति के संबंध में लिखित लेख या ग्रन्थ को संस्मरण कह सकते है।''

डॉ0 गोबिन्द त्रिगुणायत ने रमणीय अनुभूति व्यंजनामूलक संकेत शैली तथा यथार्थ को केन्द्र में रख कर परिभाषा इस प्रकार दी है––''भावुक कलाकार जब अतीत की उन्नत स्मृतियों में से कुछ रमणीय अनुभूतियों को अपनी कोमल कल्पना से अनुरंजित कर व्यंजनामूलक संकेत शैली में अपने व्यक्तित्त्व की विशेषताओं से विशिष्ट कर रोचक ढंग से यथार्थ रूप में व्यक्त कर देता है तब उसे संस्मरण कहते हैं।''

डॉ0 कृष्ण कुमार शर्मा ने भी संस्मरण में अनुभूति को अपेक्षणीय मानते हुए कहा है––''अनुभूति की कलात्मक अभिव्यक्ति कला के माध्यम से संस्मरण होती है, संस्मरण यथार्थ होता है। प्रभाव की एकता संस्मरण की विशेषता है।''

डॉ0 देवेन्द्र त्यागी सूक्ष्मता की ओर न जाकर स्थूलता की बात करते हैं––''संस्मरण जीवनी–परक साहित्य की एक ऐसी विधा है, जिसमें महापुरूषों के जीवन के विशेष गुणों, घटनाओं, कार्य, व्यापारों आदि को चित्रित किया जाता है।''

महादेवी वर्मा ने अनुभूति की तीव्रता को संस्मरण का मुख्य स्रोत मानते हुए संस्मरण को इस प्रकार परिभाषित किया––''अनुभूति की तीव्रता हमारे मनोजगत में कोई संस्कार छोड़ जाती है और वह तीव्रता अनुभूत विषय के महत्वपूर्ण या तुच्छ होने पर निर्भर नहीं रहती। इसलिए मनोवैज्ञानिक रूप से भी ये अनुभूतियाँ संस्मरण का विषय बन जाती हैं।''

दूधनाथ सिंह संस्मरण की परिभाषा देते हुए कहते हैं––''बीते हुए समय में मेरी दुबार बोलचाल 'जाने–पहचाने और अनाय लोगों से है जो स्मृति के आलोक में सज–धज कर बार–बार पलट कर आते हैं,' 'दीप्त स्मरण के क्षणों में सहसा चमक कर आने वाले अने चित्र खण्ड,' यह एक लंबे ख्याल गायन की तरह है जो बहुत दूर द्रुत में भटकती हुई पुनः आलाप पर लौटती है।''

डॉ0 राजरानी शर्मा ''संस्मरण को लेखक के जीवन की कतिपय अविस्मरणीय एवं उल्लेखनीय घटनाओं का ललित शैली में लेखा–जोखा मानती हैं।''

विष्णुकान्त शास्त्री ने स्मृतियों को संस्मरण का आधार मानते हुए कहा है––''वस्तुतः घटनाएँ जब घटती हैं तब उनका प्रभाव किन–किन स्तरों पर कितनी गहराई से पड़ रहा है? इसका सम्यक् बोध नहीं हो पाता। उन प्रीतिकर स्मृतियों का रोमन्थन ही स्पष्ट करता है कि उन व्यक्तियों या घटनाओं में जीवन को कितनी प्रेरणा और स्फूर्ति प्रदान की थी। उनके प्रति कृतज्ञता का बोध ही मुझे उनकी स्मृतियों को लिपिबद्ध करने को उत्साहित करता रहा है।''

उपर्युक्त परिभाषाओं का अध्ययन करने से पता चलता है कि सभी विद्वानों ने अनुभूति स्मृति की कलात्मक अभिव्यक्ति को संस्मरण माना है। अतीत की वे स्मृतियाँ जो हमारे मन में गहरे भीतर तक बैठ जाती हैं और उन स्मृतियों में से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या घटना आदि में से कुछ विशेष अनुभूतियों पर कल्पना का चश्मा चढ़ा कर उन्हें व्यंजना–मूलक और लालित्य प्रधान शैली में मनोवैज्ञानिक ढंग से व्यक्तित्त्व की छाप से विशिष्ट कर यथार्थ रूप में प्रस्तुत करना ही संस्मरण कहलाता है।

विषय वस्तु

संस्मरण का प्रथम तथा अनिवार्य तत्त्व विषय–वस्तु है। विषय वस्तु की महत्ता को स्वीकार करते हुए सभी समीक्षकों ने एकमत होकर लिखा है कि प्रत्येक साहित्यिक रचना का आधार उसकी विषय–वस्तु होती है। जिस प्रकार शरीर का संपूर्ण ढाँचा रीढ़ की हड्डी पर टिका होता है, उसी प्रकार साहित्यिक रचना का टिकाव विषय–वस्तु पर होता है। उपन्यास की विषय–वस्तु के गुणों का विवेचन करते हुए हिन्दी साहित्य कोषकार धीरेन्द्र वर्मा ने लिखा है–

''कथानक के संघटन और वस्तु–विन्यास में सत्याभास या विश्वसनीयता, कार्य–करण संबंध, मनोवैज्ञानिक क्षण, उत्कंठा, संघर्ष, भविष्य संकेत और चरमोत्कर्ष का होना साधारणतया आवश्यक है।''

डॉ0 मक्खनलाल शर्मा 'रेखाचित्र' की कथावस्तु पर विचार करते हुए कहते हैं––''जीवन और जगत के संबंध में आज दृष्टिकोणों में इतनी व्यापकता और गहराई आ गई है कि प्राचीनकाल के समान समग्र को अपनी सीमा–रेखाओं में समेट लेने का मोह कम से कम होता जा रहा है। प्रत्येक कथाकार अपनी–अपनी रुचि, ज्ञान क्षेत्र तथा सीमाओं के अनुसार एक विशिष्ट क्षेत्र को स्वीकार कर लेता है और उसका प्रयास उस क्षेत्र में अधिकाधिक गहन प्रवेश का होता है। रेखाचित्र में यह गहराई अधिकाधिक होती है, जिससे कि व्यंजना में मार्मिकता उत्पन्न हो सके।'' यह बात संस्मरण की विषय–वस्तु पर भी सही बैठती है।

विषय–वस्तु को संस्मरण का आधार मानना ठीक है क्योंकि वही संस्मरण का उद्देश्य होता है। किसी भी संस्मरण की विषय–वस्तु, घटना, व्यक्ति, वातावरण, दृश्य, भाव, विचार, समस्या आदि पर आधारित होती है। संस्मरण का आधार एक निर्जीव वस्तु भी हो सकती है। संस्मरण का विवेच्य

IJRSSH

मानव और जगत् का प्रत्येक क्रिया–कलाप हो सकता है। ऐसा कुछ भी नहीं है जो संस्मरण के क्षेत्र में स्वीकृत न हो पाए। कई बार वातावरण ही संस्मरण का मुख्य प्रतिपाद्य होता है। कुछ संस्मरण किसी एक भाव या बहुत सारे भावों को आधार बना कर लिखे जाते हैं। किसी समस्या से संबंधित विषय पर भी संस्मरण लिखा जा सकता है।

संस्मरण की विषय–वस्तु दीर्घ न होकर सूक्ष्म होनी चाहिए। सूक्ष्मता का अर्थ है, उसमें ऐसे तत्त्व हों जो वृहद् को लघुतम रूप प्रदान करने की विशेषता से युक्त हो। सत्य गुण का पालन संस्मरण की विषय–वस्तु में आवश्यक होना चाहिए। सत्य के अभाव में संस्मरण की शक्ति मर जाती है। सत्य गुण के साथ संस्मरण में तीव्रता का गुण भी होना चाहिए। संस्मरण में सांकेतिकता भी एक विशेष गुण होता है। संस्मरण में इन गुणों का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

उपसंहार

'प्रभाकर' शब्दों के सच्चे पारखी और भाव वस्तु के कुशल समाहर्ता थे। 'प्रभाकर जी' ने अपने लेखन में भाव और विचार की जो उदात्त संपदा जुटाई है, वह हिन्दी जगत के लिए गौरव की वस्तु है। कथ्य को सीमित शब्दों में व्यक्त करने की उनकी कला अद्भुत है। उनकी कलम की अपनी निजी पहचान है। कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' के बहुमुखी व्यक्तित्त्व की झलक एवं उनके विचारों की अभिव्यंजना उनकी गद्य कृतियों में सर्वत्र हुई है। बीसवीं सदी के प्रथम दशक से दशम दशक तक फैला है राष्ट्र चिन्तक, पत्रकार, साहित्यकार, शैलीकार, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और श्रेष्ठ मानव 'प्रभाकर' का सार्थक जीवन प्रवाह। 'प्रभाकर' के जीवन का कण–कण देश और मानवता की सेवा में बीता है। प्रभाकर की साहित्य को देन अविस्मरणीय है। मानव जीवन को ही अपनी पाठशाला समझ कर जीवन के मोती चुनने वाले ऐसे लेखक किसी भी भाषा के गौरव हो सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

(अ) आधार ग्रंथ

'जिन्दगी मुसकराई', पंडित कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ; प्रथम संस्करण, सन् 1954।

'बाजे पायलिया के घुंघरू, पंडित कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ; प्रथम संस्करण, सन् 1957।

'अनुशासन की राह', पंडित कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ; प्रथम संस्करण, सन् 1977।

'जिन्दगी लहलहाई', पंडित कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ; प्रथम संस्करण, सन् 1984।

'महके आंगन चहके द्वार', पंडित कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ; प्रथम संस्करण, सन् 1962।

IJRSSH

'कारवां आगे बढ़े', पंडित कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ; प्रथम संस्करण, सन् 1984।

'दीप चले शंख बजे', पंडित कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ; प्रथम संस्करण, सन् 1959।

'माटी हो गई सोना', पंडित कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ; प्रथम संस्करण, सन् 1985।

'आकाश के तारे धरती के फूल', पंडित कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ; प्रथम संस्करण, सन् 1952।

'क्षण बोले कण मुसकाएं', पंडित कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ; प्रथम संस्करण, सन् 1963।

'दूध का तालाब', पंडित कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ; प्रथम संस्करण, सन् 1971।

'तपती पगडंडियों पर पद यात्रा', पंडित कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ; प्रथम संस्करण, सन् 1989।

'भूले हुए चेहरे', पंडित कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ; प्रथम संस्करण, सन् 1947।

'यह गाथा वीर जवाहर की', पंडित कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ; प्रथम संस्करण, सन् 1973।

'इंदिरा गांधी', पंडित कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ; प्रथम संस्करण, सन् 1974।

(आ) सहायक ग्रंथ

आधुनिक हिन्दी साहित्य; डॉ0 रामगोपाल सिंह चौहान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, सन् 1965।

कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, व्यक्ति और साहित्य; सं0 सुरेश चन्द्र त्यागी, प्रथम संस्करण, जुलाई सन् 1986।

जिन्दगी मुसकायी; कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली, सातवां संस्करण।

जिन्दगी लहलहाई; कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, भारतीय ज्ञानपीठ कनाट प्लेस दिल्ली, प्रथम संस्करण सन् 1984।

वृहत् साहित्यिक निबंध; सं0 डॉ0 यश गुलाटी, सूर्य प्रकाशन लिमिटेड, दिल्ली, सन् 1992।

शोधपरक निबंध और विविध; डॉ0 मीरा गौतम, निर्मल पब्लिकेशन्स, शाहदरा, दिल्ली, प्रथम संस्करण, सन् 1996।

साहित्य विधा विवेक; डॉ0 देवेन्द्र त्यागी, राधाकृष्ण प्रकाशन लिमिटेड, दिल्ली, सन् 1992।

हिन्दी साहित्य का इतिहास; सं0 डॉ0 नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस 23, दरियागंज, दिल्ली, प्रथम संस्करण सन् 1973।

हिन्दी रेखाचित्र सिद्धान्त और विकास; डॉ0 मक्खनलाल शर्मा, शब्द और शब्द आगरा।

हिन्दी साहित्य का वृहत् इतिहास; डॉ0 हरवंश लाल शर्मा (चतुर्दश भाग), नागरी प्रचारिणी सभा काशी, प्रथम संस्करण, सन् 1957।

हिन्दी वाङ्मय; बीसवीं शती; डॉ0 नगेन्द्र, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, प्रथम संस्करण, सन् 1972।

हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास: रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, नवम संशोधित संस्करण सन् 1998।

हिन्दी भाषा और साहित्य; कृतियाँ, दिव्यांशु जवाहर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली,1997।

हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ; डॉ0 शिवकुमार शर्मा, अशोक प्रकाशन, नई सड़क दिल्ली, सोलहवाँ संस्करण, सन् 1998।

पत्र–पत्रिकाएँ

आलोचना
अरिहन्त
कादम्बिनी
दैनिक ट्रिब्यून
दैनिक भास्कर
हंस

IJRSSH